पुस्तक समीक्षा

जन-पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति है वेदना की दास्तान

प्रो० कमल प्रसाद बौद्ध

प्राचार्य, रघुनन्दन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मठियापुर, दानापुर, पटना

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, गीतकार, कथावाचक, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, नाटककार एवं आध्यात्य चिंतक श्रीकांत व्यास अपनी रचनाओं में अलग तेवर के लिए जाने जाते हैं। इनकी रचनाओं में व्यंग्य का जबरदस्त पुट देखने को मिलता है। इनकी सद्य: प्रकाशित हिन्दी कविता संग्रह 'वेदना की दास्तान' एक सशक्त कृति है। संग्रह की कई कविताएँ व्यंग्य से लवरेज हैं। श्रीकान्त व्यास की इस काव्य कृति में उपेक्षित, वंचित, पीड़ित और शोषित समाज की पीड़ा को बखूबी देखा जा सकता है। कवि ने इस काव्य पुस्तक में कुछ कविताओं में मानवेत्तर प्राणी को पात्र बनाया है और उसकी पीड़ा को सशक्त ढंग से दर्शाया है। 'वेदना की दास्तान' को अगर शोषित समाज का आईना कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। कवि श्रीकान्त व्यास ने साहित्य की पद्य एवं गद्य विधाओं में करीब तीन दर्जन मौलिक पुस्तकों का सृजन किया है। इनकी तमाम पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनकी कृतियाँ सामाजिक सरोकार लिए हुए हैं। कवि की सभी रचनाएँ संदेशमूलक और प्रेरणादायक हैं। रचनाएँ आन्दोलित करने वाली हैं। कविता संग्रह 'वेदना की दास्तान' के साथ इनकी शानदार हिन्दी व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोह मुग्ध नंद' का भी प्रकाशन हुआ है। दोनों पुस्तकें हाल में प्रकाशित हुई है।

श्रीकान्त व्यास की 'वेदना की दास्तान' पुस्तक में पाखंड, शोषण, अन्याय और दोहरे चरित्र को बेहतीन ढंग से दिखाया है। इनकी इस काव्य कृति में तमाम कविताओं को पाँच खंडों में विभक्त किया गया है। कविता का आरंभ ग़ज़ल से होती है और अंत छंद्धबद्ध द्विपदियों से। इसके अलावा संग्रह में मुक्त छंद्ध कविताएँ, कुंडलियाँ, गीत, प्रार्थना, भजन भी समाहित है। कविताओं के तथ्य, भाव, बिम्ब, शैली, को देखते हुए 'वेदना की दास्तान' शीर्षक सटीक बैठता है।

कवि श्रीकान्त व्यास की उम्र उन्चास वर्ष होने को है। बढ़ती उम्र के साथ उनकी रचनाशीलता परवान चढ़ती जा रही है। आधुनिक युग में गद्य/पद्य दोनों भाषा-रूपों में रचना प्रस्तुत करने वाले रचनाकारों में श्रीकान्त व्यास मूर्धन्य है। रचनाओं में कवि के शब्द बोलते हैं। कविवर भवानी प्रसाद की उक्ति-'जैसा बोल वैसा ही लिख' श्रीकान्त व्यास की कविताएँ उक्त कथन के अनुरूप है। इनकी कविताओं में वेदना को अभिव्यक्ति मिली है। संवेदना रचना के प्राण है। जो रचना पाठकों को उद्वेलित करे, वैसी ही रचना पाठकों को भी भाती हैं। संग्रह शीर्षक 'वेदना की दास्तान' मेरी धारणा को पुष्ट करती है। जिस तरह कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी रचना को प्रकाशन में लाने हेतु खुद अपने प्रकाशन की स्थापना की थी ठीक वैसे ही श्रीकान्त व्यास ने भी अपना प्रकाशन खोल रखा है। व्यास जी ने अपनी इस काव्य पुस्तक को खुद के स्थापित प्रकाशन 'मुक्त फलक प्रकाशन' से छपवाई है। व्यास जी बहुभाषाविद् हैं। साहित्यकार, सम्पादक, पत्रकार, कलाकार और प्रकाशक भी है। व्यास जी लेखक के साथ अपनी हिन्दी मासिक पत्रिका 'मुक्त फलक' का प्रकाशन और सम्पादन भी करते हैं।

व्यक्तित्व के निर्माण में साहित्य का योगदान अपेक्षित है। साहित्य 'हित सहित' का भाव लिए समाजिक जीवन, परिवेश, व्यवस्था से प्राप्त अनुभवों का शब्दों में व्यक्त होकर लोकप्रियता प्राप्त करती है। इस कसौटी पर श्रीकान्त व्यास खरे उतरते हैं। वे विरल साहित्य-सेवी, आदरणीय साहित्य-साधक के रूप में अपनी पहचान बनाकर शिखर की ऊँचाई प्राप्त कर चुके हैं। कविता ह्रदय की वाणी है जिसमें जीवनानुभव प्रतिबिंबित होते हैं। उसका अपना प्रवाह है। समीक्ष्य कविताएँ भाव-विचार-कल्पना की त्रिवेणी निर्मित कर पवित्रता

की मिसाल बन गई है। कथा सम्राट प्रेमचंद ने 'सहित्य को राजनीति के आगे चलने वाली मशाल' कहा है। किन्तु वही साहित्य मशाल बनने की क्षमता रखता है, जिस साहित्य में दीन-दुखियों के दर्द को अभिव्यिक्ति मिली हो। समीक्ष्य कृति 'वेदना की दास्तान' इस कसौटी पर खड़ी उतरती है।

संग्रह की कविताओं से गुजरने पर कवि की उद्‌भावना शक्ति पर प्रकाश पड़ता है। अन्य बातों के अलावा कवि द्वारा गधे को जो मूर्खता का पर्याय माना जाता है, उसे कवि ने सर्वहारा, वंचित और श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधि बनाया है। वह उपयुक्त प्रतीत होता है। गधा धोबी के कपड़े के गट्‌ठर धोता है, घाट पर ले जाता है, फिर वापस ले आता है। ऐसा ही वास्तविक जीवन में देखने में आता है। यहाँ व्यास जी की कविता में रश्मिरथि के कर्ण की तरह है जो गधे को नया प्रतीक बनाकर उसके पशु चरित्र को प्रक्षालित कर मानवीय धरातल पर ला खड़ा किया है। यह कविता का नूतन प्रयोग है जो सामान्य धारणा से उपर है। कवि की उद्‌भावना शक्ति तारीफे काबिल है।

वहीं चरणपादुका का नया रूप हमारे सामने उपस्थित किया गया है। राम की चरणपादुका को भरत ने सिर पर रखा, पादुका का महत्त्व बढ़ाया। किन्तु, वर्तमान युग का यह कवि तो दलित, दमित, उपेक्षित और तिरस्कृत वर्ग की वाणी रखा है। यह सर्वदा नवीन उद्‌भावना है। कविता संग्रह में 'बुद्वत्व' हाँ मैं प्रेम करता हूँ। 'पौधे की दास्तान', 'मै व्यंग्यकार हूँ। 'हम चरणपादुका' 'माँ की ममता' 'हमारी शायरी', 'हम गधे है','वैश्विक दृष्टि,'नाटयकर्मी','मैं मुकुट हूँ, 'इन्साफ चाहिए' सहित अनेक कविताएँ हैं जो व्यास जी को यशस्वी कवि होने का प्रमाण पेश करती है।

संग्रह में भक्ति रस की भी कविताएँ आकर्षित करती है। वर्तमान भौतिक युग में जहाँ भक्ति की जगह ध नार्जन पर जोर है, कवि ने भक्ति भावना का परिचय देकर एक बार फिर भक्तियुग के कवियों की तरह जन-मन में भक्ति-भाव जगाने का प्रयास किया है। सर्वहारा, वंचितों, शोषितों की संख्या देश में दो तिहाई से अधिक है, उसे वाणी देनेवाला जनकवि कहलाता है। बाबा नागार्जुन ने सुअरी को मादरे हिन्द की बेटी कहकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया, श्रीकान्त व्यास भी अपनी पद्‌य रचनाओं के आधार पर 'जनकवि' कहलाने के अधिकारी है।

संत कबीर का प्रभाव 'वेदना की दास्तान' के कवि पर पड़ा है, इसका उदाहरण स्वयं उनकी कविताएँ है। कविवर व्यास जी ने युग जमाने की खबर ली है, हमें सावधान किया है, कर्त्तव्य की सीख दी है। अनवरत साहित्य साधना में रत व्यास जी की उपलब्धियों पर मुझे गर्व है। व्यास जी की कविताओं में विषय-वैविध्य है जो उनकी अनुभूति विविधता व व्यापकता का सूचक है। डॉ० रामविलास शर्मा का कथन है, ''भाषा के व्यवहार की श्रेष्ठ उपज विधा है साहित्य। इस मान्यता का साक्ष्य व्यास जी का पद्य एवं गद्य साहित्य है। भाषा की कसौटी गद्य है तो पद्‌य भाषा का व्यावहारिक रूप है। व्यास जी की कविता इसका सशक्त और प्रत्यक्ष प्रमाण है। कविता भाषा का परम निखर है जिसे धूमिल ने, ''कविता, भाषा में आदमी होने की तमीज है'' कहा है। कविवर व्यास जी की प्रयुक्त भाषा भी आदमी को आदमियत होने की तमीज सिखाती हुई यथार्थ का रूप लेकर सुपाठ्‌य हो जाती है। पुस्तक की भूमिका समालोचक डॉ0 शिववंश पाण्डेय ने लिखी है। उन्होंने व्यास जी की पुस्तक की भूरि-भूरि सराहना की है।

श्रीकान्त व्यास की काव्य कृति अनूठी और अपने ढंग की अनोखी रचना है। जन-पीड़ा की सशक्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति है 'वेदना की दास्तान'। यह पुस्तक मंत्रिमंडल सचिवालय(राजभाषा) विभाग, बिहार सरकार के अंशानुदान से प्रकाशित है। इसे मुक्त फलक प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। पुस्तक का प्रकाशन हार्ड बॉण्ड और पेपर बैक दोनों संस्कारण में हुए है। पेपर बैक का मूल्य जहाँ 295 रूपये है, वहीं हार्ड बॉण्ड का मूल्य 350 रुपये रखा गया है।

पुस्तक : वेदना की दास्तान (हिन्दी कविता संग्रह)

लेखक : श्रीकान्त व्यास

प्रकाशकः मुक्त फलक प्रकाशन,बनर्जी पथ, दरियापुर गोला, पटना- 800004 (बिहार)

प्रथम संस्करणः जून, 2022

पृष्ठ संख्या : 144